



उग्र प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

# वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 10

कुल पृष्ठ-8

16 से 22 जून, 2022

दयानन्दाब्द 198

सृष्टि सम्वत् 1960853123

सम्वत् 2079

ज्ये. शु.-10

**आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी आर्य संन्यासी पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज की 16वीं पुण्यतिथि के अवसर पर 12 जून, 2022 को युवा संकल्प व सम्मान समारोह भव्यता के साथ सम्पन्न आर्य राष्ट्र के प्रथम स्वप्न द्रष्टा थे स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज**

**- स्वामी आर्यवेश**

**स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज किसान, मजदूर एवं दबे-कुचले लोगों के मसीहा थे - स्वामी रामवेश**

**स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज ने आर्य समाज में सबसे अधिक आर्य संन्यासी दीक्षित कराये - स्वामी आदित्यवेश**



आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी, आर्य संन्यासी, युवाओं के प्रेरणास्रोत पूर्व सांसद स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज की 16वीं पुण्यतिथि के अवसर पर दिनांक 12 जून, 2022 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, आश्रम टिटौली, रोहतक, हरियाणा में युवा संकल्प व सम्मान समारोह का भव्य आयोजन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के नेता स्वामी आर्यवेश की अध्यक्षता में हुआ। इस समारोह में मुख्य अतिथि नशाबंदी परिषद् हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी रहे।

इस अवसर पर हरियाणा नशाबन्दी परिषद् के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी ने कहा कि स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के साथ मैंने बहुत लंबे समय तक कार्य किया है। स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज सदैव समाज निर्माण के पुरोधा के रूप में कार्य करते रहे। उनका समाज सुधार के कार्यों में बहुत बड़ा योगदान रहा। कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, किसान एवं मजदूरों के मुद्दों पर

स्वामी जी हमेशा अग्रणी नेता की भूमिका में रहते थे। उन्होंने कहा कि यह देश संतों का देश है। देश को नई दिशा देने में संतो ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज को 16वीं पुण्यतिथि के अवसर पर उन्हें याद करते हुए तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज आर्य राष्ट्र निर्माण के प्रथम स्वप्न द्रष्टा थे। स्वामी जी ने ही सर्वप्रथम राजनीति में आर्य समाज को अपनी भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया था। उन्होंने हरियाणा प्रान्त में 'आर्य सभा' नाम से एक रानीतिक पार्टी का गठन करके कार्य करने का संकल्प लिया। आज उनकी पुण्यतिथि के अवसर पर हम सबको यह संकल्प लेना चाहिए कि स्वामी जी के अधूरे स्वप्नों को पूरा करने में प्राण-पण से कार्य करेंगे। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि वर्तमान समय में बच्चों को संस्कारित करना अत्यन्त आवश्यक है। इस कार्य के लिए स्वामी

इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक, हरियाणा समय-समय पर शिविरों का आयोजन करके बच्चों को संस्कारित करने के लिए कृत-संकल्पित है। आज पूरे देश में ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान आर्य समाज के अनेक संगठन शिविरों के माध्यम से देश के युवाओं को संस्कारित करने का कार्य कर रहे हैं जो अपने आप में बहुत ही सुन्दर कार्य है। आर्य समाज को इसी तरह के कार्य करते रहने की आवश्यकता है। वर्ष 2024 में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती आ रही है। स्वामी दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती को दृष्टिगत रखते हुए हम सबको लगातार शिविरों तथा अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से स्वामी दयानन्द जी के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के कार्य को करते रहना चाहिए। स्वामी दयानन्द जी के विचारों एवं सिद्धान्तों से ही संसार का उपकार हो सकता है। इसलिए हम सबको विशेष कार्यक्रम आयोजित करके कार्य करते रहने की आवश्यकता है।

शेष पृष्ठ 8 पर



सम्पादक - प्रो. विठ्ठलराव आर्य



# यज्ञ द्वारा दुर्व्यसन निवारण

- डॉ. जगदीश प्रसाद

यज्ञ एक व्यापक शब्द है। ऋग्वेद में यह शब्द 580 बार, यजुर्वेद में 243 बार, सामवेद में 63 बार तथा अथर्ववेद में 298 बार अर्थात् चारों वेदों में यह शब्द 1184 बार आया है। निघण्टु के अनुसार – यज्ञ को वेव, अध्वर, मेघ, निमघ, सबनम, अग्निहोत्र, देवता, मख, विष्णु, इन्द्र, धर्म प्रजाति आदि नामों से पुकारा जाता है।

'यज्ञ' शब्द 'यज्' धातु से बना है। 'यज्' धातु के तीन अर्थ हैं : 'यज् देवपूजासंगतिकरणदानेषु' – (अ) देवपूजा, (आ) संगतिकरण तथा (इ) दान। अतः यज्ञ के विविध प्रकार – देवयज्ञ (अग्निहोत्र या हवन), ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ, अश्वमेधयज्ञ आदि में यज्ञ के प्रायः सभी अर्थ समाविष्ट हैं। संसार के विभिन्न देशों में अनादि काल से यज्ञ होता आया है, भले ही आज उसका रूप दीपक, मोमबत्ती या अगरबत्ती ने ले लिया है।

प्रस्तुत विषय की सीमा में रहते हुए, यज्ञ के एक प्रकार – देवयज्ञ पर, विशेषतः दुर्व्यसन – निवारण के संदर्भ में वस्तुस्थिति द्रष्टव्य है।

मन के व्यापारों पर यज्ञ का प्रभाव –

भौतिकता प्रधान आधुनिक जीवन ने मानव मस्तिष्क में अनेक प्रकार की तनाव ग्रन्थियाँ उत्पन्न कर दी हैं, जिनसे जीवन का महत्व ही समाप्त हो गया है। इस प्रकार के मानसिक तनावों पर यज्ञ का सकारात्मक प्रभाव खोजने के लिए दिल्ली के डिफेंस इन्स्टीट्यूट ऑफ फिजियोलोजी एण्ड ऐलाइड साइंसेज के वैज्ञानिक ई. डॉ. डब्ल्यू. सेल्वामूर्ति ने एक साहसिक प्रयोग किया था। इसको एक शोधपत्र के रूप में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई. आई. टी.), दिल्ली में 4 नवम्बर, 1989 को आयोजित हुए योगसम्मेलन में प्रस्तुत किया गया था। इस शोधपत्र का शीर्षक था – मन्त्रों का मन और शरीर के स्वास्थ्य पर प्रभाव। डॉ. सेल्वामूर्ति ने इस प्रयोग के ईसीजी, ईईजी, वर्णक्रम विश्लेषण तथा आधुनिक कम्प्यूटर आदि सुसंस्कृत उपकरणों एवं तकनीकों का प्रयोग किया था। आठ व्यक्तियों पर प्रयोग के पश्चात् उनका अवलोकन था कि यज्ञ के दौरान हृदय स्पन्दन की दर कम होने की प्रवृत्ति होती है, त्वचा का ताप एक डिग्री सेल्सियस बढ़ जाता है, इत्यादि। इससे उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि यज्ञ के वायुमण्डल से मस्तिष्क की व्यग्रता आकुलता कम होती है, मन का तनाव कम होता है तथा मन-मस्तिष्क अपने स्वाभाविक (तनावमुक्त) रूप में कार्य करने के लिए मुक्त हो जाता है।

दुर्व्यसन निवारणार्थ यज्ञ : प्रदूषण का एक भयंकर प्रकार है विचार-प्रदूषण। इससे व्यक्ति के विचार इतने प्रदूषित हो जाते हैं कि वह अच्छे को अच्छा और बुरे को बुरा समझने में असमर्थ हो जाता है। वह शराब, गांजा, स्मैक, धूम्रपान, गुटखा तथा चाय-कॉफी आदि को सुख का साधन समझने लगता है। अतः वह नशीले पदार्थों के सेवन का आदी बन जाता है – व्यक्तिगत स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था, परिवार तथा समाज के लिए यह दुर्व्यसन हानिकारक ही नहीं, वरन सर्वविनाशकारी होते हुए भी व्यक्ति इसे छोड़ नहीं पाता है। व्यक्ति का स्वाभिमान तथा मनोबल – संकल्पशक्ति आदि समाप्त हो जाते हैं – इससे जीवन का अर्थ ही समाप्त हो जाता है। पाश्चात्य जगत् में प्रयुक्त होने वाली विधियाँ ऐसे व्यक्ति को सुधारने में अपने आपको असमर्थ पाती हैं। ऐसी भयावह स्थिति में प्राचीन मनीषियों द्वारा आविष्कृत यज्ञ ही डूबते को तिनके का सहारा सिद्ध होता है। इस दिशा में भारतीय सेना में साइकियाट्री विभाग में सीनियर एडवाइजर के पद पर सेवारत लै. कर्नल जी. आर. गुलेचा द्वारा किये गये अनेक प्रयोगों में से मात्र दो का उल्लेख प्रस्तुत है, जिससे यज्ञ का प्रभाव स्पष्ट होता है।

कलकत्ता में 1987 में हुए इण्डियन साइकियाट्रिक सोसाइटी के उन्तालिसर्वे वार्षिक अधिवेशन में श्री गुलेचा ने अपना अग्निहोत्र ऐन यूजफुल ऐडजंक्ट इन ट्रीटमेण्ट ऑफ ए रजिस्ट्रेण्ट ऐण्ड डिमोस्ट्रिटेड स्मैक ऐडिक्ट नामक शोधपत्र का वाचन किया था, जो बाद में इण्डियन जर्नल ऑफ साइकियाट्री के 1987 के 29 (3) अंक में पृष्ठ 247-252 पर प्रकाशित हुआ था। उस शोध पत्र का केवल सारांश निम्नांकित है :

स्मैक से मुक्ति – भारतीय सेना के एक पच्ची वर्षीय अधिकारी व्यक्ति को प्रयोग के लिए चयनित किया गया था। वह व्यक्ति गत कई वर्षों से सुरा, कोकिन, कैन्नाबिस तथा सिग्रेट आदि नशीले पदार्थों का सेवन करता रहा था। प्रयोग के समय वह प्रतिदिन तीन ग्राम हेरोइन (स्मैक) का आदी बना हुआ था। नशा छुड़ाने के लिए प्रयुक्त होने वाली प्रचलित विधियों को उस पर दो बार प्रयुक्त किया जा चुका था, किन्तु वे उसकी नशे की लत (दुर्व्यसन) न छुड़ा सकी थीं।

उस दुर्व्यसनी की यज्ञ द्वारा चिकित्सा करने के लिए उसे अग्निहोत्र के सम्मुख बैठने के लिए प्रेरित किया गया। अनिच्छापूर्वक अनमने मन से तीन दिन यज्ञ के सामने बैठने पर, यज्ञ के सामने बैठने की उसमें इच्छा जागृत हुई – किसी अन्य के द्वारा यज्ञ में लाये जाने के स्थान पर, वह

स्वयं यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए आया सातवें दिन तो उसकी अवस्था यह थी कि वह स्वयं रुचि पूर्वक आहुतियाँ डालने लगा।

उसके स्वभाव में परिवर्तन का एक दैनिक चार्ट बनाया गया था। चार सप्ताह के यज्ञ से उसमें स्मैक के लिए तलब समाप्त हो गई। आगामी पन्द्रह मास के नियमित यज्ञ के अभ्यास से वह सब प्रकार के नशों से घृणा करने लगा – नशों से मुक्त हो गया। सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय विद्यमान अंतरिक्ष किरणों तथा यज्ञ से उत्पन्न विद्युत चुम्बकीय तरंगों के तुल्यकालन के कारण मन की शान्ति का रहस्य है। यद्यपि वर्तमान काल के वैज्ञानिक जगत् को यह अविश्वसनीय प्रतीत होता है, किन्तु आँकड़े तथ्य को प्रकट करने में समर्थ हैं।

शराब से मुक्ति : मनोवैज्ञानिक श्री गुलेचा का एक दूसरा प्रयोग शराब (सुरा) की लत वाले व्यक्ति पर था। पाश्चात्य जगत् में यह धारणा है कि शराब के सेवन को कम तो किया जा सकता है, किन्तु इससे पूरी तरह मुक्त नहीं हुआ जा सकता। श्री गुलेचा का निम्नलिखित प्रयोग अग्निहोत्रा इन दि ट्रीटमेण्ट ऑफ ऐल्कोहॉलिज्म नाम के शोध लेख के रूप में जनवरी 1989 में कलकत्ता में हुए इण्डियन साइकियाट्रिक ऐसोसिएशन के इकतालिसर्वे वार्षिक अधिवेशन में प्रस्तुत किया गया था। इस शोध का संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है।

अद्वारह मद्यपों पर यज्ञ का प्रयोग किया गया। कम्प्यूटरीकृत ईईजी अध्ययन किया गया। दो सप्ताह के नियमित दैनिक यज्ञ से उनमें शराब पीने की इच्छा समाप्त हो गई। यज्ञ करना छोड़ने पर कुछ सप्ताह तक उनकी अवस्था ठीक रही, किन्तु, उसके पश्चात् उनमें शराब पीने की इच्छा पुनः जागृत हो गई। इस प्रकार दो सप्ताह के यज्ञ के अभ्यास से उनको दुर्व्यसन से पूर्णतः मुक्ति नहीं मिली। अतः शराब पीने के दुर्व्यसन से पूर्णतः मुक्ति पाने के लिए यज्ञ को नियमित रूप से सदैव प्रतिदिन करना शराब की आदत को छुड़ाने में एक महत्वपूर्ण अंग है।

उपर्युक्त प्रयोगों पर मनन करने से पता लगता है कि यज्ञ करने से मन की सद्वृत्तियाँ जागृत होती हैं, जो व्यक्ति को शराब, सुल्फा, गांजा, भांग, अफीम, स्मैक तथा तम्बाकू आदि के सेवन से विमुख करती हैं। अतः दुर्व्यसन के निवारण में यज्ञ एक अमोघ अस्त्र है। इसीलिए धर्मग्रन्थों में कहा है कि यज्ञं तपः यज्ञ करना सर्वोत्तम तप है।

– सेवा निवृत्त रासायन शीडर, मेरठ कालेज, मेरठ

ओ३म्  
दैनिक  
यज्ञ पद्धति



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

रामलीला मैदान, नई दिल्ली-110002  
दूरभाष :- 011-23274771

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा  
द्वारा प्रकाशित  
'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/- रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/- रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,  
“महर्षि दयानन्द भवन” 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

दूरभाष :-011-23274771, 011-42415359

मो.:-8218863689

## आर्य वीर दल जोधपुर के तत्वावधान में दिनांक 29 मई, 2022 से 8 जून, 2022 तक आयोजित युवा चरित्र निर्माण शिविर भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न



सम्मान दिलाया, जातिवादी मानसिकता पर कठोर प्रहार किया। आर्य समाज संगठन ने अनेक कुुरीतियों के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की है।

आर्य वीर दल राजस्थान के अधिष्ठाता संचालक श्री भंवरलाल जी आर्य ने कहा कि राष्ट्र को यदि कोई अखंड बना सकता है तो वह केवल आर्य समाज की विचारधारा ही है जो पूरे विश्व को एक सूत्र में पिरोने का कार्य कर सकता है। क्योंकि आर्य समाज की विचारधारा सार्वभौम है। मानवतावादी है, सभी जीवों के लिए कार्य करता है। आर्य समाज



आर्य वीर दल जोधपुर के तत्वावधान में दिनांक 29 मई, 2022 से 8 जून, 2022 तक आयोजित युवा चरित्र निर्माण शिविर आर्य समाज फोर्ट महावीर शाखा गोलनाड़ी उम्मेद चौक में भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न।

इस अवसर पर जोधपुर शहर से विधायक श्रीमती मनीषा पंवार जी ने ऑन लाईन के माध्यम से जुड़कर आर्य वीरों का उत्साहवर्द्धन करते हुए कहा कि आर्य वीर दल के माध्यम से शारीरिक विकास के साथ-साथ आत्मिक और बौद्धिक उन्नति के विकास के लिए जो कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं उससे युवकों का सर्वांगीण विकास होता है। क्योंकि शिक्षा के साथ-साथ युवाओं को चरित्रवान एवं संस्कारित करना अत्यन्त आवश्यक है। आर्य वीर दल शाखा में सामाजिक और धार्मिक सौहार्द के माध्यम से देश को एकजुटता में जोड़ने का कार्य बखूबी सिखाया जाता है। उन्होंने युवाओं को राष्ट्रप्रेम के सम्बन्ध में बताते हुए कहा कि राष्ट्र हित में ही सबका हित है, और राष्ट्र धर्म ही सबसे बड़ा धर्म है।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि हरीश सोलंकी सी.आई. शदर कोतवाली, जोधपुर ने आर्य वीरों को शारीरिक रूप से सबल बनकर फौज पुलिस में जाकर देश हित के लिए कार्य करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि जहाँ समाज में अराजकता, अभद्रता होती है उसे रोकने का प्रयास करना चाहिए और युवाओं को आर्य समाज से जोड़कर सत्य के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी जाने की अत्यन्त आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि मैं भी आर्य वीर दल के कार्यक्रमों से प्रेरित होकर आर्य समाज संगठन से जुड़ा जिसमें श्री दलपत सिंह जी तथा श्री शिवदत्त जी का सकारात्मक साथ रहा है।

समाजसेवी श्री दीपक सिंह जी ने कहा कि युवा किसी भी क्षेत्र में जायें लेकिन अपना सर्वस्व परोपकार में लगायें। आर्य समाज ने देश को गुलामी से आजादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और हमेशा परोपकार के लिए कार्य करने की प्रेरणा देता है। आर्य समाज की विचारधारा से प्रेरित होकर देश की आजादी के लिए लाखों क्रांतिकारी तैयार हुए, गुरुकुलों की शिक्षा को आगे बढ़ाया गया, नारी



की स्थापना करके स्वामी दयानन्द जी ने मनुष्यों के ऊपर जो उपकार किया है उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। आर्य समाज संगठन को अपने तेजस्वी स्वरूप के अनुरूप कार्य करने की आवश्यकता है। हम सबको आर्य समाज में अधिक से अधिक युवाओं को जोड़ने का कार्य करना चाहिए, क्योंकि किसी भी देश की रीढ़ उस देश की युवा पीढ़ी होती है। इसलिए आर्य वीरदल के माध्यम से जगह-जगह शिविरों का आयोजन लगाया जाये और उन शिविरों के माध्यम से युवाओं को आर्य समाज के विचारों से अवगत कराकर उन्हें चरित्रवान एवं निष्ठावान नागरिक बनाने का प्रयास तेज किया जायेगा।

आर्य वीर दल राजस्थान के अध्यक्ष श्री चांदमल जी आर्य ने कहा कि "पहला सुख निरोगी काया" सामाजिक, धार्मिक राजनीतिक, पारिवारिक किसी भी जिम्मेदारी को सहजसता से निभाने के लिए सबसे पहले शरीर स्वस्थ होना चाहिए, इसी से आत्मिक, बौद्धिक व सामाजिक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए युवाओं को समय-समय पर शिविरों के माध्यम से आत्मिक एवं चारित्रिक ज्ञान अवश्य देने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर श्री गणपत सिंह जी चौहान, प्रो. अयूब खान जी तथा अन्य वक्ताओं ने भी अपने-अपने विचारों से आर्य वीरों का मार्गदर्शन किया।

इस अवसर पर श्री गणपत सिंह जी चौहान, प्रो. अयूब खान जी तथा अन्य वक्ताओं ने भी अपने-अपने विचारों से आर्य वीरों का मार्गदर्शन किया।

आर्य समाज फोर्ट के प्रधान श्री गणपत सिंह जी ने कहा कि शिविर के इस समापन समारोह में आर्य वीरों ने शारीरिक दम-खम का शानदार प्रदर्शन किया, आर्य वीरों ने पी.टी., योगासन, बॉक्सिंग, त्वाइकोडो, जिम्नास्टिक आदि का सामूहिक व व्यक्तिगत प्रदर्शन किया। आग के छल्ले में कूद कर दर्शकों को अचंभित कर दिया, वहीं श्री मुकुल आर्य व श्री देव आर्य ने आग बनाठी का शानदार प्रदर्शन किया।

शिविर के मुख्य व्यायाम शिक्षक श्री उम्मेद सिंह आर्य ने आग बनाठी से हतप्रभ अंगारे निकाल कर और मुँह से आग निकालने का शानदार प्रदर्शन कर अंधेरे को जगमग कर दिया उनके साथ श्री कुलदीप सिंह जी, श्री मानवेन्द्र सिंह जी सहयोगी शिक्षक की भूमिका निभाते रहे।

स्वागत की कड़ी में पधारे विशिष्ट अतिथि समाजसेवी श्री दीपक सिंह जी पंवार, प्रो. अयूब खान जी, प्रतिपक्ष नेता श्री गणपत सिंह चौहान, राजस्थान हाईकोर्ट के ए.ए.जी. श्री अनिल जी गौड़, बाल आयोग के अध्यक्ष डॉ. धनपत जी गुर्जर, आजम जोधपुरी जी, श्रीमती तारा देवी जी पार्षद वार्ड संख्या-51, श्री हरीश जी सोलंकी सी.आई. शदर कोतवाली का आर्य समाज फोर्ट, आर्य वीर दल जोधपुर के पदाधिकारियों ने ओ३म् पट्ट पहनाकर स्वागत एवं अभिनन्दन किया।

अंत में डॉ. लक्ष्मण सिंह जी आर्य ने शिविर के आयोजनकर्ताओं, शिविर में पधारे अतिथियों व शिविरार्थियों को धन्यवाद किया। कार्यक्रम का संचालन श्री जितेंद्र सिंह जी आर्य ने किया।

इस अवसर पर आर्य विरांगना दल की संचालिका सर्वश्री हिमांशी जी आर्या, गजे सिंह जी भाटी, शिव प्रकाश जी सोनी, पूनम सिंह जी शेखावत, वीरेंद्र जी मेहता, हिम्मत सिंह जी बडगुजर, गोविंद सिंह जी पंवार, राजेन्द्र सिंह जी चौहान, कुलदीप सिंह जी, किशोर सिंह जी, महेश जी आर्य, शैलेन्द्र सिंह जी, संजय सिंह जी, गौरव जी पंवार, देव जी आर्य, यागवेन्द्र सिंह जी, सौरभ सिंह जी, देवेन्द्र सिंह जी, कृष्णा जी पंवार सावित्री जी पंवार, कविता जी आर्या, पुष्पा जी सोलंकी, उन्नति आर्या, सहित आर्य वीर विरांगनाएं व मातृ शक्ति उपस्थित रहे।

## अमर शहीद प. रामप्रसाद बिस्मिल के 125वें जन्मोत्सव पर कृतज्ञ राष्ट्र की श्रद्धांजलि बिस्मिल का बलिदान युवाओं को सदैव प्रेरणा देता रहेगा - अनिल आर्य

शनिवार, 11 जून 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल के 125वें जन्मोत्सव पर गुरुकुल कण्वाश्रम में श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य जी ने कहा कि पं० रामप्रसाद बिस्मिल क्रांतिकारियों के सिरमौर रहे, उनसे प्रेरणा पाकर अनेकों नौजवान स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े। अशाफाक उल्ला ख़ाँ और बिस्मिल की दोस्ती जग जाहिर है, एक कट्टर आर्य समाजी और एक कट्टर मुस्लिम, लेकिन राष्ट्र की बलिवेदी पर दोनों इक्कट्टे फांसी पर झूल गए इससे बड़ा सामाजिक समरसता का कोई और उदाहरण नहीं हो सकता। बिस्मिल ने देश की आजादी के लिए घर, परिवार सब छोड़ कर राष्ट्र के लिए सब कुछ न्यौछावर कर दिया।

आचार्य महेन्द्र भाई ने कहा कि बिस्मिल की



जीवनी पढ़ कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं, वास्तव में उनके जीवन चरित्र को पाठ्यक्रम में पढ़ाने की आवश्यकता है जिससे नई पीढ़ी उनके बलिदान से परिचित हो सके।

प्रान्तीय महामंत्री श्री प्रवीण आर्य ने कहा कि बिस्मिल का जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित था, उनका जीवन युवाओं के लिए सदैव प्रकाश पुंज का कार्य करेगा। "उनकी तुर्बत पे नहीं एक भी दिया, जिनके खून से जले थे चिरागे वतन। आज महकते हैं मकबरे उनके जिन्होंने बेचे थे शहीदों के कफन" इस अमर बलिदानी का जन्म 11 जून, 1897 को उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर जिले में हुआ था।

सुप्रसिद्ध गायक प. रुबेल सिंह आर्य, श्री रमेश चंद्र स्नेही, श्रीमती प्रवीण आर्या के ओजस्वी गीतों ने सभी में उत्साह पैदा कर दिया। प्रमुख रूप से श्री रामकुमार सिंह आर्य, श्री धर्मपाल आर्य, श्री कमल आर्य, आस्था आर्या, श्री अरुण आर्य, श्री गौरव झा आदि उपस्थित रहे।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, धर्म प्रतिष्ठान, युवा निर्माण अभियान के संयुक्त तत्वावधान में  
13 जून, 2022 को युवा निर्माण शिविर का हुआ शुभारंभ  
देश सेवा को समर्पित कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण शिविरों को प्राथमिकता दे रहा है आर्य समाज  
- स्वामी आर्यवेश



नशामुक्त समाज, नारी उत्पीड़न मुक्त समाज, शोषण मुक्त समाज, भ्रष्टाचार मुक्त समाज की पुनर्स्थापना करने के लिए कार्य करना चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि समाज में सप्तक्रांति के संकल्प को पूरा करने के लिए युवाओं को आगे आना होगा। उन्होंने कहा कि ऐसे अनेक शिविरों का आयोजन करके देश युवाओं को जागरूक करने का कार्य आर्य समाज बढ़-चढ़ कर करे। स्वामी जी ने कहा कि वर्ष 2024 में स्वामी दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती आ रही है जिसे हम सबको धूमधाम से मनाने के लिए अभी तैयारी करनी चाहिए। स्वामी दयानन्द जी के सिद्धान्तों एवं विचारों को आगे बढ़ाने के लिए आर्य समाज में युवाओं को अधिक से अधिक जोड़ने का प्रयास होना चाहिए। वर्तमान समय में देश की युवा पीढ़ी भटक रही है, इसलिए आर्य समाज की ओर अधिक जिम्मेदारी बढ़ जाती है। हम सभी आर्यजनों से अपील करते हैं कि पूरे देश में जगह-जगह युवा निर्माण शिविर, कन्या शिविर एवं चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन करके युवाओं के अन्दर अपनी संस्कृति और सभ्यता को कूट-कूट कर भरने का कार्य करें। यदि देश का युवा शिक्षित होने के साथ-साथ चरित्रवान बनेगा तभी हमारा देश पुनः विश्वगुरु बन सकता है। स्वामी जी ने युवाओं में जोश भरते हुए कहा कि यदि पूरे देश में स्वामी दयानन्द जी के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता करेंगे तो निश्चित रूप से आर्य समाज के सिद्धान्तों एवं विचारों के प्रति लोग आकर्षित होंगे।

इस शिविर के मुख्य आचार्य सहस्रपाल आर्य ने कहा कि सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में पूरे हरियाणा में 50 शिविरों का आयोजन कर रहा है। अलग-अलग स्थानों पर

आयोजित होने वाले शिविरों में बेटे वा बेटियों के शिविर अलग-अलग समय पर आयोजित हो रहे हैं। युवाओं को आध्यात्मिक प्रशिक्षण के साथ-साथ सर्वांगसुंदर व्यायाम, जूडो कराटे, लाठी चलाने तथा भारतीय खेलों का ज्ञान भी करवाया जा रहा है। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के कार्यकारी प्रधान श्री सज्जन सिंह राठी ने कहा कि आर्य समाज ने प्रारंभ से ही देशभक्त तैयार किए हैं। आज भी इसी बात के लिए आर्य समाज कृत संकल्पित है। इस अवसर पर गुरुकुल धीरणवास के प्रधान स्वामी आदित्यवेश जी, श्री ऋषिराज शास्त्री, श्री अजीत पाल, श्री अनिल आर्य, श्री संदीप योगी, साध्वी उत्तमा आर्या, श्री गुलाब सिंह आर्य, स्वामी मुक्तिवेश, श्री अजय पाल आर्य, श्री महासिंह आर्य, श्री तकदीर आर्य आदि उपस्थित रहे। युवा निर्माण शिविर का समापन 17 जून, 2022 को होगा।



सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, धर्म प्रतिष्ठान, युवा निर्माण अभियान के संयुक्त तत्वावधान में स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक, हरियाणा में दिनांक 13 जून, 2022 को युवा चरित्र निर्माण शिविर का हुआ शुभारंभ। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने ध्वजारोहण करके कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उद्घाटन के अवसर पर स्वामी जी ने उद्बोधन देते हुए कहा कि देश सेवा का संकल्प लेने वाले नवयुवकों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। आज समाज में सप्तक्रांति के सात बिंदुओं को लागू करने का प्रयास करना चाहिए। जातिवाद मुक्त समाज, सांप्रदायिकता मुक्त समाज, पाखंड मुक्त समाज,

## स्वामी इन्द्रवेश जी स्मृति सम्मान समारोह की चित्रमय झलकियाँ





# दिल के रोगों से जुड़ा है कोलेस्टेरॉल

— राजगोपाल एस वर्मा

कोकीन और कैफीन के बाद लोगों को जिस चीज से खौफ खाना चाहिए वह कोलेस्टेरॉल है, ऐसा चिकित्सकों और शोधकर्ताओं का मानना है। कारण साफ है, शरीर में कोलेस्टेरॉल नामक इस रसायनिक तत्व की जरूरत से अधिक मात्रा भले-चंगे व्यक्ति को हृदय रोगी बनाने और असमय मौत की ओर धकेलने की ताकत रखती है।

मानव शरीर में कोलेस्टेरॉल की कुल मात्रा जीवन भर करीब १५० ग्राम या पांच पाउंड के आसपास रहती है। इसका ज्यादातर हिस्सा मस्तिष्क, स्नायुओं, मांसपेशियों और वसीय ऊतकों में रहता है। कुल मात्रा में से करीब २० ग्राम कोलेस्टेरॉल शरीर की मेटाबोलिक प्रक्रियाओं में सक्रिय भूमिका निभाता है जो खास तौर से यकृत, रुधिर, प्लाज्मा और अन्तड़ियों में रहता है। कोलेस्टेरॉल के विषय में एक खास बात यह है कि यह विशिष्ट रसायन केवल जीव-जंतुओं के शरीर में ही पाया जाता है, पेड़-पौधे ऐसे किसी रसायन से वास्ता नहीं रखते।

मांसाहारी लोगों के शरीर में कोलेस्टेरॉल की जरूरी मात्रा उनके आहार से आमाशय के जरिए पहुंचती रहती है। कुछ मात्रा में शरीर खुद कोलेस्टेरॉल का उत्पादन करता है, संश्लेषण के जरिए शाकाहारी लोगों में कोलेस्टेरॉल की पूरी मात्रा शरीर स्वयं ही उत्पादित करता रहता है। जो लोग मिश्रित आहार लेते हैं उन्हें कोलेस्टेरॉल आहार और शरीर में सिंथेसिस दोनों ही प्रक्रियाओं से मिलता रहता है। यदि आहार से शरीर को मिलने वाले कोलेस्टेरॉल की मात्रा जरूरत से अधिक हो तो शरीर सिंथेसिस की प्रक्रिया का इस तरह से समायोजन करता है कि उसकी कुल मात्रा स्थिर बनी रहे। शरीर की कोशिकाओं द्वारा कोलेस्टेरॉल बनाने की प्रक्रिया बहुत ही जटिल है जिसमें बारी-बारी से और बिजली की सी तेजी से अनगिनत इन्जाइम्स की प्रक्रिया होती रहती है तब जाकर एसीटेट नामक एक सामान्य कोशिकीय रसायन से कोलेस्टेरॉल का निर्माण होता है।

कोलेस्टेरॉल को शरीर में मौजूद एक 'खलनायक' की संज्ञा देना उसके साथ अन्याय करना होगा। वास्तव में यह शरीर के लिए जरूरी एक 'गुरु अणु' है जो निश्चित मात्रा और निर्धारित रूप में मानव के लिए बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कोलेस्टेरॉल की कोशिकाओं की दीवारों के निर्माण में एक जिम्मेदार भूमिका है। वहां यह एक ऐसे गेट कीपर का काम करता है जिसकी ड्यूटी कोशिकाओं के लिए जरूरी और गैर जरूरी तत्वों की पहचान कर उनके आवागमन को संचालित करना है, दूसरे शब्दों में कहें तो यह जीवन को अपनी मुट्ठी में रखे हुए है।

इतना ही नहीं कोलेस्टेरॉल शरीर रूपी इमारत की आधार की ऐसी ईंटों का काम करता है कि इसके बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। यह शरीर के कई महत्वपूर्ण अंगों में बनने वाले रसायनों को भी सामग्री उपलब्ध कराता है। शरीर की विभिन्न प्रक्रियाओं के नियमन (रेग्यूलेशन) के लिए अधिवृक्त ग्रंथियों से कार्टिसोल का उत्पादन, आहार से वसा के अवशोषण में सहायता के लिए यकृत में पित्त का निर्माण, यौन ग्रंथियों और यौन कार्यप्रणाली की परिपक्वता के प्रतीक यौन हारमोनों के डिंब ग्रंथियों और अंडकोशों में उत्पादन कोलेस्टेरॉल की मदद के बिना होना संभव ही नहीं है। कोलेस्टेरॉल के जितने अणु मानव शरीर में प्रविष्ट होते हैं उनमें से अधिकांश अंततः पित्तीय अम्ल बनकर मल के रूप में शरीर से बाहर निकल जाते हैं जिनका स्थान कोलेस्टेरॉल के नए अणु ले लेते हैं। यह अनवरत प्रक्रिया प्रतिदिन जारी रहती है।

कोलेस्टेरॉल और धमनीय हृदय रोगों में रिश्ते का अचानक ही पता नहीं लगा। पिछले लगभग ७५ सालों से इस संबंध में धीमी गति से लेकिन गहन शोध के परिणामस्वरूप ही वैज्ञानिक कोलेस्टेरॉल के इस खतरनाक

कुप्रभाव के विषय में एकमत हो पाए हैं। हमारे रक्त में कोलेस्टेरॉल तीन विभिन्न रूपों में प्रवाहित होता रहता है:— वेरी लो-डेंसिटी लिपोप्रोटीन्स (एल.डी.एल.) लो-डेंसिटी लिपोप्रोटीन्स (एल.डी.एल.) एवं हाई-डेंसिटी लिपोप्रोटीन्स। इनमें से प्रथम अर्थात् अत्यंत कम घनत्व वाले लिपोप्रोटीन्स से हृदय रोगों का खतरा नहीं के बराबर है लेकिन एलडीएल या कम घनत्व वाले लिपोप्रोटीन्स कोलेस्टेरॉल को निश्चित रूप से इस जानलेवा प्लांट का अपराधी करार दिया जा सकता है। यह आरोप लंबे समय तक किए गए विभिन्न सर्वेक्षणों तथा क्लीनिकीय परीक्षणों के आधार पर लगाया गया है।

इस स्थिति के विपरीत कोलेस्टेरॉल का उच्च घनत्व लिपोप्रोटीन्स वाला अंश हृदय रोगों से बचाव का काम करता है। हमारी कोशिकाएँ जिस प्रक्रिया से कम घनत्व लिपोप्रोटीन्स के अणुओं की पहचान कर उन को चिपकाती हैं (रिसेप्टर प्रक्रिया) उसके विस्तृत अध्ययन के लिए अमेरिका के दो वैज्ञानिकों माइकेल ब्राउन तथा जोसेफ गोल्डस्टिन को वर्ष १९८५ के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

उन्होंने दिखाया था कि स्वस्थ स्थिति में कम घनत्व लिपोप्रोटीन द्वारा कोशिकाओं में भेजा गया कोलेस्टेरॉल

की सलाह मात्र देकर धमनीय हृदय रोगों के चंगुल से बचाया जा सकता है।

कम-घनत्व लिपोप्रोटीन कोलेस्टेरॉल के शिकार बच्चों का उपचार शीघ्रता से तथा सावधानीपूर्वक किया जाना जरूरी है। इस संबंध में सावधानी रखने की आवश्यकता इसलिए है कि कोलेस्टेरॉल का नियमित मात्रा स्तर बनाए रखने के लिए बच्चों को दी जाने वाली औषधियां और आहार संबंधी प्रतिबंधों का उनकी शारीरिक वृद्धि पर प्रतिकूल असर पड़ता है। दो से पांच वर्ष की आयु के बच्चों के मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र के बेहतर विकास के लिए पर्याप्त वसा और कोलेस्टेरॉल की बेहद जरूरत रहती है। छह वर्ष के बाद बच्चों को धीरे-धीरे कम वसा तथा कम कोलेस्टेरॉल का आहार खिलाना चाहिए।

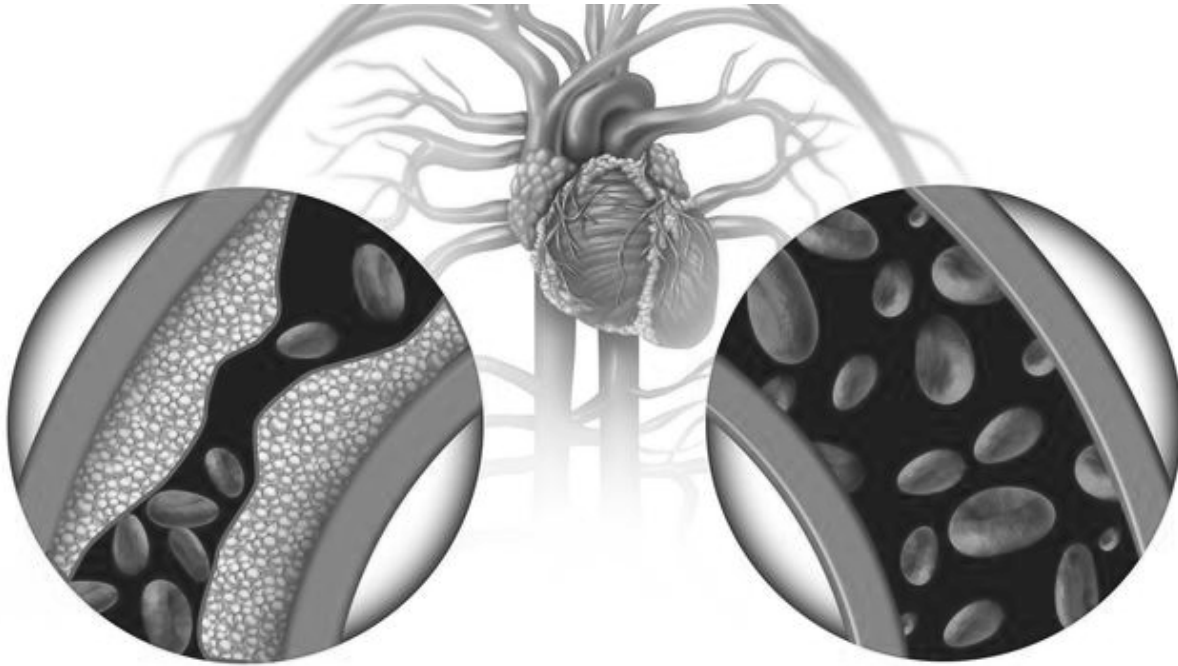
कोलेस्टेरॉल तथा धमनीय हृदय रोगों के रिश्तों पर काम कर रहे शोधकर्ताओं का कहना है कि २० वर्ष से अधिक आयु वाले सभी पुरुष महिलाओं को अपनी सीरम कोलेस्टेरॉल स्तर पर निगाह रखनी चाहिए। २०० से २३६ मिलीग्राम प्रति डेसीलीटर स्तर वाले व्यक्ति को 'बार्डर-लाइन हाई' केस माना जाता है जिनका लिपोप्रोटीन विश्लेषण करने के बाद उपचार किया जाता है। १६० मिलीग्राम प्रति डेसीलीटर या अधिक एल डी एल-कोलेस्टेरॉल स्तर के लोगों को उचित उपचार देना अति आवश्यक है। साथ ही १३०-१५० मिलीग्राम प्रति डेसीमीटर स्तर वाले व्यक्तियों के जीवन-वृत्त तथा उनकी आहार संबंधी आदतों को जानने के बाद उनको भी उचित उपचार और लाइफस्टाइल में परिवर्तन कराना आवश्यक माना जाता है।

शोधकर्ताओं का निष्कर्ष है कि कोलेस्टेरॉल तथा हृदय रोगों से खतरे की संभावनाएं उस स्थिति में अधिकतम हैं जबकि: वह पुरुष हो, उसके परिवार में धमनीय हृदय रोगों का इतिहास रहा हो, वह प्रतिदिन लगभग दस सिगरेट पीता हो, हाइपरटेंशन से पीड़ित हो, एच.डी.एल.

—कोलेस्टेरॉल सांद्रता अत्यंत कम (३५ मिलीग्राम प्रति डेसीमीटर से कम) हो, व्यक्ति मधुमेह का रोगी हो और उसे मोटापा (सामान्य से ३० प्रतिशत अधिक भार) घेरे हो। चिकित्सक अब सलाह देते हैं कि सभी पुरुष-महिलाओं को अपनी सीरम कोलेस्टेरॉल स्तर की जानकारी होनी चाहिए जिसके अनुसार उन्हें उचित आहार तथा उपचार की सलाह दी जा सके।

कोलेस्टेरॉल को लेकर अधिकांश जागरूक लोग जिस तथ्य से पूरी तरह अवगत हो चुके हैं वह है आहार की मदद से एल.डी.एल-कोलेस्टेरॉल स्तर को घटाने का प्रयास करना। इस संबंध में चिकित्सक ही उपयुक्त सलाह दे सकते हैं लेकिन यह जान लेना चाहिए कि सामान्यतः मांसाहारी आहार और घी तथा मक्खन जैसे उच्च सैच्युरेटेड फैट युक्त आहार से अधिकतम कोलेस्टेरॉल मिलता है। आहार में घुलनशील और अघुलनशील फाइबर जैसे सेब और मक्का एवं गेहूँ का दलिया व्यक्ति के शरीर में उपयुक्त लिपोप्रोटीन स्तर बनाने में सहायक होता है जिससे व्यक्ति स्वस्थ रह सकता है।

यद्यपि शोध से व्यक्ति के आहार तथा कोलेस्टेरॉल स्तर के तनावपूर्ण रिश्ते की परख की गई है लेकिन इसके अलावा कई अन्य रिश्ते भी हैं, जो व्यक्ति के कोलेस्टेरॉल स्तर को सामान्य बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नियमित रूप से व्यायाम द्वारा अपना मोटापा घटाना इसका एक अच्छा तरीका हो सकता है। इसी तरह धूम्रपान त्याग कर हृदय रोगों को दूर रखा जा सकता है। औषधियों के नुस्खे तो चिकित्सक अपने रोगियों को देते ही हैं।



उच्च घनत्व वाले लिपोप्रोटीन से हटाए गए कोलेस्टेरॉल को स्टीक ढंग से संतुलित बनाए रखता है। यदि किसी तरह रक्त में कम घनत्व वाले लिपोप्रोटीन की मात्रा बहुत अधिक हो जाए तो कोशिकाओं में कोलेस्टेरॉल का जमाव होने लगता है। यह जमाव जब हृदय की धमनियों में होने लगता है तो हृदय की सामान्य रक्त आपूर्ति में रुकावट आने लगती है और शुरू होता है एथिरोस्लेरिसिस नामक रोग। नतीजतन हृदय की मांसपेशियों में रक्त प्रवाह संकुचित होता जाता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति मामूली से शारीरिक श्रम से भी सीने में दर्द की शिकायत करने लगता है। इसका परिणाम होता है हृदय आघात अथवा मायोकार्डियल इन्फार्क्शन नामक स्थिति का विकसित होना जिसमें पहले से ही संकुचित धमनियों में रक्त के थक्के जमने लगते हैं जिससे अचानक हृदय को रक्त की सप्लाई बंद हो जाती है और व्यक्ति बिना किसी चेतावनी के मृत्यु का शिकार बन जाता है।

कोलेस्टेरॉल के साथ-साथ इस रोग को पनपाने में कई अन्य स्थितियाँ भी जिम्मेदार हैं। आयु के बढ़ाव के साथ-साथ यह खतरा बढ़ता जाता है, साथ ही इसकी संभावनाएं सामान्यतः पुरुषों में ही होती हैं। उच्च रक्तचाप के रोगियों तथा धूम्रपान के शौकीनों को हृदय रोगों की चपेट में आने का खतरा अपेक्षाकृत कहीं अधिक होता है।

शरीर में कोलेस्टेरॉल की उचित मात्रा बनाए रखने तथा इस तरह विभिन्न हृदय रोगों से दूरी बनाए रखने के लिए उपहार के साथ-साथ व्यक्ति को अपने संतुलित खाने-पीने की आदतों तथा बेहतर दिन-चर्या को अपनाना चाहिए। नियमित रूप से व्यायाम करने से लोगों के लिपोप्रोटीन स्तर में जरूरी सुधार देखा गया है। हृदय रोगों के कगार पर खड़े लोगों को कम-वसा वाले दूध तथा कम सामिष भोजन

सोशल मीडिया के  
माध्यम से  
स्वामी आर्यवेश जी  
से जुड़ें



आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :-  
[www.facebook.com/SwamiAryavesh](https://www.facebook.com/SwamiAryavesh) व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।  
ई-मेल : [aryavesh@gmail.com](mailto:aryavesh@gmail.com)  
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :-

अवितरण की दशा में लौटारें -  
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा  
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

पृष्ठ 1 का शेष

## 12 जून, 2022 को युवा संकल्प व सम्मान समारोह भव्यता के साथ सम्पन्न



सक्रिय कार्यकर्ता सम्मान दिया गया। 10 व्यक्तियों को किसान मित्र सम्मान प्रदान किया गया।

समापन कार्यक्रम बेटे बचाओ अभियान की मुख्य प्रशिक्षक छवि आर्या, एकता आर्या व योग में नेशनल गोल्ड मेडलिस्ट राजकुमारी आर्या ने किया। शिविरार्थियों ने आर्यजनों के सामने कमांडों, लाठी, योगासन व जुड़ो का प्रदर्शन किया। अनेक कार्यक्रमों के साथ कन्या चरित्र निर्माण शिविर का समापन 12 जून, 2022 को भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।



इस अवसर गुरुकुल धीरणवास के प्रधान तथा मिशन आर्यावर्त के निदेशक स्वामी आदित्यवेश जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि आज यह जो आर्य युवा निर्माण अभियान व बेटे बचाओ अभियान चलाया जा रहा है, यह सब स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज की देन है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज में सबसे अधिक आर्य संन्यासियों की फौज स्वामी इन्द्रवेश जी ने तैयार की। उन्होंने कहा कि स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज द्वारा तैयार की गई दयानन्द की फौज ही आर्य समाज में सक्रिय रूप से कार्य कर रही। स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज दयानन्द सरस्वती जी के कार्यों को आगे बढ़ाने में आजीवन संलग्न रहे। अब उनके द्वारा चलाये गये कार्यों को आगे बढ़ाने में पूज्य स्वामी आर्यवेश जी महाराज प्राण-पण से दिन-रात जुटे रहते हैं।

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री बिरजानंद एडवोकेट ने कहा कि स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज की प्रेरणा से पूरे देश में अनेक सामाजिक आन्दोलनों में भाग लिया। स्वामी जी का पूरा जीवन संघर्ष वाला रहा। स्वामी जी के सान्निध्य में कार्य करने से हमें संघर्ष करने की प्रेरणा हमेशा मिलती रहती है। आज हमें स्वामी इन्द्रवेश जी द्वारा किये गये कार्यों को आगे बढ़ाने व आर्य समाज के सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है।

16वीं पुण्यतिथि के अवसर पर स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज को स्मरण करते हुए स्वामी नित्यानन्द जी, श्री नारायण सिंह, श्री रणधीर

रेडू, मानव सेवा प्रतिष्ठान, दिल्ली के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री, श्री महावीर टेकेदार, बेटे बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या, राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या, कल्याणी आर्या सहित अन्य महानुभावों एवं विद्वानों ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

शिविर समापन के अवसर पर 500 कन्याओं को यज्ञ पर संकल्प भी करवाया गया। शिविर समापन के अवसर पर बेटे बचाओ अभियान की 50 कार्यकर्ताओं को सम्मानित भी किया गया।

सम्मान समारोह में स्वामी इन्द्रवेश स्मृति सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि युवा किसान नेता श्री गौरव टिकैत रहे। उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति ऋषि व कृषि से जुड़ी हुई है। आज भी हमें ऋषि दयानंद के आदर्शों पर चलने की आवश्यकता है। उन्होंने किसानों को राजाओं का राजा बताया था। सम्मान समारोह में आर्य विरक्त सम्मान से स्वामी सच्चिदानंद जी, वैदिक विद्वान सम्मान से आर्य नेता, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा तेलंगाना आंध्रप्रदेश, के प्रधान प्रो. विठ्ठलराव आर्य, (हैदराबाद), डॉ मुमुक्षु आर्य, नोएडा, युवा सम्मान से श्री भंवरलाल आर्य (राजस्थान), श्री देवेंद्र सतबीर आर्य (रोहतक), श्री रामपाल शास्त्री (दिल्ली), आर्य वीरांगना सम्मान से साध्वी उत्तमा यति (दिल्ली), छवि आर्या (पाली), राज कुमारी आर्या (रोहतक) शामिल रही। भजोपदेशक सम्मान से श्री नन्दराम आर्य को दिया गया। इनके अतिरिक्त 21 को

प्रो० विठ्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)

सम्पादक : प्रो० विठ्ठलराव आर्य (सभा मंत्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : [sarvadeshik@yahoo.co.in](mailto:sarvadeshik@yahoo.co.in), [sarvadeshikarya@gmail.com](mailto:sarvadeshikarya@gmail.com) वैबसाइट : [www.vedicaryasamaj.com](http://www.vedicaryasamaj.com)

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।